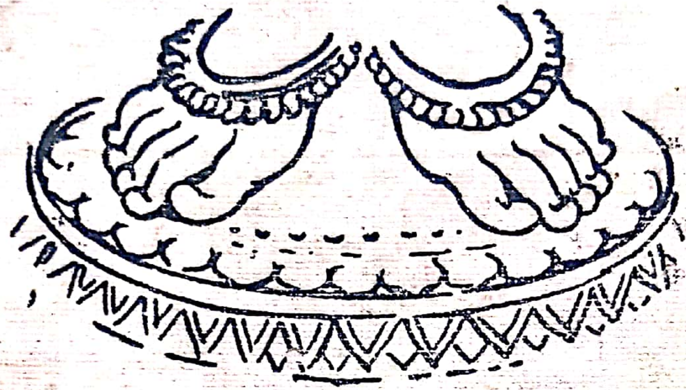
चण्डी-चर्य्या





श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

Dr. Ramdeo Jha

चण्डी-चर्य्या

'अद्भुत चरित करत के चित्रित
शब्द-फलक पर अति अनवद्य'

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

मार्कण्डेयपुराण-प्रोक्त श्री चण्डी (दुर्गासप्तशती) क मैथिली-भावानुवाद

प्रथम संस्करण
बासन्ती नवरात्र, १९२० वि०

दक्षिणा
५० नवका पाइ



प्रकाशक
मैथिली-मन्दिर
दरभंगा

मुद्रक
श्री भूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस, दरभंगा

Scanned by CamScanner

'ओं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः'

रहितहुँ ई नूतन पुरातनी कथा मात्र परिधान
मूल न होइतहुँ तूल न अनुवादक ई रुचि अवदान

शब्द - भाव अछि रूप दुहू, छथि जे सत - असत क रूप
तनिकहि चर्य्यागत चर्चा अछि अर्चा अपर अनूप

रसेँ कवित यदि, कथेँ काव्य यदि सत् शिव सुन्दर रूप
उक्ति त्रिविध, गुण त्रिविध, त्रिशक्तिक त्रिगुणमयिक अपरूप

मातृगिरा सम्बद्ध पुनि
मातृ - चरित्र सतृष्ण ।
'सुमनें' उपहत शुचि सरुचि
सुनथु सुधी 'श्रीकृष्ण' ॥

'ओं नमश्चण्डिकायै'

चण्डी-चर्या

[१]

राग द्वेष मन मल युगल जीवन विधिक अमित्र ।
पुरुष मोह निद्रित उठथु शक्तिक प्रथम चरित्र ॥

सूर्य-पुत्र सावर्णि कोना आठम मनु भेला शक्ति - पद सेवि ।
मार्कण्डेय बुझाय कहल, सुनु, दुर्गा - सप्तशती मन देवि ॥
स्वारोचिष मन्वन्तर जहिया, चैत्र-वंश केर सुरथ नृपाल ।
पालल प्रजा पुत्रवत् सन्तत, किन्तु शत्रु 'कोलारि' कराल ॥
जीतल हिनका बाह्य शत्रु ओ, अन्तः शत्रु घर क अनुचर ।
मिलि जुलि लुटल कोशबल सभटा गेला पड़ाय विपिन एकसर ॥

सोचथि ममता विवश, दुष्ट वश प्रजा कोना ? संपति कत गेल ।
कतय रहल चतुरंग सैन्य जे, कते यत्न सँ संचित भेल ॥
छला ओतहि परिवार निरासित वैश्य समाधि नाम अति खिन्न ।
धन लोभेँ निज बन्धु-गणहि सँ जे निर्वासित छला विपन्न ॥
सोचथि तदपि कोना अछि परिजन, किछु न बुझैछी हुनक कुशल ।
ममता बंधन जनिक न छूटल, मिलि दुहु मुनि-आश्रम पहुँचल ॥
छला सुमेधा तपोनिरत, हुनि निकट बैसि पुनि पुछलन्हि जाय ।
हम दुहु गोटे समान दुखी छी, शत्रु - मित्र सँ वंचित हाय !!
बुझितहुँ नहि चित चेति सकल छी, चिन्ता पुर - परिवार क हेतु ।
विषय दुखद अनुभव करितहुँ छी विकल तदर्थ, तकर की हेतु ॥
ऋषि मेधा बजला—सुनु, प्राणी मात्र सचेतन ज्ञानागार ।
माया वश पड़इत छथि बंधन ममतामय भव - कारागार ॥
जीव दिवान्ध, निशान्ध कतेको, तुल्य-दृष्टि दिन-राति क बीच ।
मनुज जेना अछि ज्ञान-युक्त, तहिना पशु पक्षी कीटहु नीच ॥
क्षुधा - पीडितहुँ कीट - पतंगो ममता वश सन्तान क लेल ।
जोगबय यथाशक्ति भोजन, मानव ममत्व केर दास अलेल ॥
स्वार्थ सभ क अछि मूलाकर्षण, प्रत्युपकार क आशा राखि ।
सेबय निज परिवार, समाज क चिन्तन करइछ निज हित भाखि ॥

स्वार्थ परार्थ क एक दिशा अछि, मायामयी प्रभाव विशाल ।
जनिक वशेँ श्रीहरि धरि निद्रा-मुद्रित होथि, पर क की हाल ॥
ज्ञानी धरि मोह क विवर्त मे पड़थि जनिक कारण से शक्ति ।
विदित महामाया छथि, बन्धन-मुक्ति हेतु, तनिकर करु भक्ति ॥
सुरथ पुछल—'से के छथि, जनिका कहि मायामयि परिचय देल ।
कहु उत्पत्ति रूप गुण तनिकर जनिकर वश ई संसृति भेल' ॥
'वत्स! नित्य छथि, समय-समय पर तदपि लेथि अवतार प्रमान ।
देव-कार्य हित, दुष्ट-दलन हित बनल व्यक्त अव्यक्त महान ॥
प्रलय काल हरि शेष-सेज पर सृष्टि समटि सुतला निश्चिन्त ।
हुनक कान-मल सँ जनमल मधु—कैटभ दुइ जन असुर दुरन्त ॥
मिलि दुहु नाभि-कमल पर बैसल चतुरानन केँ झपटल आबि ।
सुतल देखि हरि केँ विधि वंचित कंपित-हृदय मने-मन भाबि ॥
लगला करय बंदना देविक, उठथु जगत्पालक भगवान ।
रक्षा करथु हमर भुज-बल सँ असुर मारि, कय जगत क त्रान ॥
"विश्वेश्वरी जगद्धात्री, उत्पति—थिति—नाश जनिक गुन तीन ।
निद्रामयी विष्णु-माया जे स्वाहा स्वधा वषट स्वर - लीन ॥
वाङ्मय रूप तीन मात्रा सँ उच्चारित, पुनि मात्रा आध ।
अनुच्चार्य छथि, केवल योगी जन क समाधि मात्र सँ साध ॥

सन्ध्या सावित्री जननी जे विश्व सृजथि, पालथि, नाशथि ।
प्रलय मचाबथि नव रचना हित, दिशा काल रूपें जागथि ।।

विद्या, माया, मेधा, स्मृति पुनि मोह जनिक अछि प्रकृति विकृति ।
कालरात्रि हे, महारात्रि हे, मोहरात्रि हे, श्री-ह्री-मति ।।

लज्जा, पुष्टि, तुष्टि उर-उर मे शान्ति-क्रान्ति, सम-विषम क्षमा ।
खड्ग शूल शर गदा परिघ चक्रायुध - भीषण, मृदु परमा ।।

परा परम ईश्वरी जगत बिच सत् वा असत् सकल तव रूप ।
अखिलमयी जगदम्ब ! अहँक स्तुति मे के वावदूक नहि चूप ?

हरि धरि कें निद्रित कयलहुँ पुनि शिव विधि कें रचलहुँ कतबेरि ।
महाशक्ति ! के सकत बरनि ? निज महिमें अहँ वर्णित छी ढेरि ।।

विधि एहि विधि कय शक्ति-वंदना, हरिक जागरण हित मति आनि ।
हर्षित भेल देखि प्रभु जागल, त्यागल निद्रा; जयतु भवानि !!

फोलितहिँ आँखि, देखि काँखिअबइत विधिकेँ दुहु दानव बलवान ।
कुपित उठल ! छल अरुण नयन ! अति सदय हृदय अच्युत भगवान ।।

द्वन्द्व मचल छल, हलचल सगरो, सागर क्षुब्ध तरंगित भेल ।
वर्ष वर्ष बीतल, नहि जीतल गेल असुर अति दर्पित भेल ।।

तखन महामाया पुनि असुर क मति मोहित कय बहकौलन्हि ।
'छी प्रसन्न बल देखि तोहर, वर माङह जे मन' कहबौलन्हि ।।

हरि कहलन्हि—'तोँ मरह हमर हाथेँ, एतबे अछि इष्ट हमर ।'
कहल, देखि जलमय सगरो सागर मधु-कैटभ प्रत्युत्तर ॥
'जतय पानि नहि, हतह ततय' से सुनि श्रीहरि सोचल तत्काल ।
राखि जाँघ पर काटि चक्र सँ नाशल मधु - कैटभ विकराल ॥
कैटभारि मधुसूदन विधिकेँ रक्षित कयलन्हि एहि प्रकार ।
आदि चरित कालीक, सुनू पुनि महिषमर्दिनी-चरित प्रचार ॥

[२]

अहङ्कार दानव प्रबल दैवी सम्पद दाबि ।
दिव्य शक्ति संहतहिँ हत चरित मध्य गत भाबि ॥

देवासुर संग्राम मचल, महिषासुर इन्द्र क बीच प्रखर ।
जीतल असुर, पड़ाय देवगण जाय नुकयला गिरि-गह्वर ॥
इन्द्रासन बैसल महिषासुर, अत्याचार जगत भरि व्याप्त ।
चिन्तित सुर-गण प्रजापति क सङ गेल जतय हरिहर संप्राप्त ॥
कहल सकल वृत्तान्त महिष असुर क नितान्त दारुण दुर्दान्त ।
चरण शरण गहि रहल देव-गण, कुपित उमापति लक्ष्मीकान्त ॥
भृकुटी कुटिल वदन रोषारुण स्फुरित अधर जनु प्रलय क ज्वाल ।
देव - संघ केर अंग-अंग सँ महातेज निर्गत तत्काल ॥

बनलि प्रतीक ऐक्य शक्ति क से तेजोमयी मूर्ति नारी ।
जनिका देखि सुखी सुरगण जत हर्षें भरलन्हि किलकारी ॥
शंभु-तेज सँ मुख रचना, भुज विष्णु - तेज सँ, यम सँ केश ।
चन्द्र, इन्द्र ओ वरुण तेज सँ उरु, कटि, जघन बनल सविशेष ॥
ब्रह्मतेज सँ चरण, सूर्य सँ आङुर, नाक कुबेर क अंग ।
अनल अनिल सँ श्रवण नयन, ओ अन्य देव सँ बनल उपांग ॥
तेज राशि सँ समुद्भूत शक्ति क ई अद्भुत रूप निहारि ।
उत्साहित सुर सकल जते जे महिषासुर सँ मानल हारि ॥
निज त्रिशूल सँ शूल देल शिव, हरि सुदर्शनहिं रचि नव चक्र ।
अक्षमाल विधि,पाश वरुण, धनु-शर समीर, सुरपति गढि वज्र ॥
यम दण्डक उपहार, काल रचि खड्ग धार ओ ढाल विशाल ।
अम्बर अम्बर देल, उदधि उपहार रत्न–मणि, कुंडल काल ॥
विविध विभूषन अंग अंग हित स्वयं विश्वकर्मा गढि रत्न ।
गिरि हिमवान सिंह वाहन, मद-पात्र धनाधिप देल सयत्न ॥
वन उपवन फल–फूल निवेदल, सर सरसिज, नद पाद्य उदार ।
घन शंख - ध्वनि कयल, अर्चना मे विद्युत दीप क उपहार ॥
निज निज आयुध भूषण वाहन सबहिं समर्पल देव समाज ।
सम्मानित भगवती गरजली सुररिपु दनुज क तर्जन काज ॥

ध्वनित दिगंत, प्रतिध्वनि त्रिभुवन व्याप्त, प्रकंपित भूधर प्रांत ।
गर्जन सुनि अति कुपित महिष दौड़ल सेना समेत दुर्दांत ॥
के हुंकार भरल, जयकार ककर मनवथि सुरगण सोत्साह ।
हमर अछैतहिं ? ई सोचितहिं महिषासुर क्रोधेँ भेल बताह ॥
दौड़ल दुर्दम दानव दल लय जे जतेक उद्दंड अबंड ।
किन्तु देखि चौंकल सभ सहसा नारी तेजःपुंज प्रचंड ॥
जनिक चरण सँ दबल महीतल, जनिक किरीट गगन भेदी ।
धनु टंकारें कंपित अग - जग, गर्जन नभ पताल छेदी ॥
अस्त्र-शस्त्र लय बढल असुर-दल एक दिस, दोसर दिस देवी ।
महिषासुर क सकल सेनानी जे सभ उद्भट रण - सेवी ॥
चामर लय चतुरंग सैन्य, रथ सहस साजि चललाह उदग्र ।
असिलोमा, बाष्कल, विडाल गज हय पैदल सङ बढला व्यग्र ॥
भिन्दिपाल तोमर पट्टिस असि परशु शक्ति सभ आयुध हाथ ।
टूटल दुर्गा भगवती क ऊपर जत छल सभ सेना सार्थ ॥
सहज भावसँ, निज प्रभाव सँ, दिव्य अस्त्र लय अविलम्बा ।
काटल रिपुदल दानवदलिनी विश्वविजयिनी जगदम्बा ॥
क्रोधेँ जे निःश्वास चलल उपजल गण अगणित सुर पक्षक ।
दनुजक जाल पलहिमे कटलक देवी जकर स्वयं रक्षक ॥

पंचानन पंजा उठाय झपटैत दबोचल दानव दल।
देवी शूल शक्ति लय मारल, हारल जते विपक्ष प्रबल ॥
माथ उड़ल ककरहु, हाथे नहिं ककरहु चरण कतहु उड़ि गेल।
नाचि रहल ककरहु कबंध,क्यो अंधबधिर, क्यो गलि-पचि गेल ॥
क्यो मर्दित गर्दा मे, रुधिरक धारा मे क्यो डुबि बहि गेल।
पतो कतोकक कतहु न लागल कटलपिचल जे गलि-पचि गेल ॥
आगि लागि छनमे तृन कें जरबय खढोरि मे जेना पसरि।
दैत्य सैन्य कें स्वाहा कयलन्हि स्वाहामयी स्वयं अगुसरि ॥
उत्साहित प्रमथक गण बढले, वाहन सिंह गरजि झपटल।
शेष निशेष, समरजयिनी जननी पर सुर प्रसून बरिसल ॥

[३]

क्षीण देखि सेना निज महिषासुर पहुँचल संग्राम क भूमि।
गरजि-गरजि लागल मारय गण ताकि-ताकि दिस-दिस घुमि-घूमि ॥
खुर उठाय, नाङरि घुमाय, सिंघों चलाय हौंकरैत महिष।
प्रमथक गणकें थकुचि-थकुचि कयलक अति व्यथित मथित अनिमिष
शृंग बलें गिरि शृंग उपाड़ल, फेकल देखल अमर जतय।
गतिक वेग सँ धरणी कंपित, उच्छ्लल जलधि तरंगित भय ॥

टुकड़ी टुकड़ी मेघक टिक्कड़, प्रलय-वायु सन श्वास प्रखर।
क्रुद्ध युद्ध मे जुटल देखि महिषासुर कें जननी सत्वर॥
वध क हेतु भय व्यग्र उग्र दुर्गा क्रोधेँ जरइत जनु आगि।
बान्हल नागपाश लय जेहि सँ जाय न शत्रु समर सँ भागि॥
महिष रूप तजि, सिंह रूप गहि झपटल, झटकि पाश बंधन।
क्रुद्धा दुर्गा गर्दनि मोचलि, पुरुष प्रगट भेल पुनि तेहि छन॥
तकरहु शर सँ उड़ा देल शिर, पुनि मत्ता हाथी बनि गेल।
सूंढ मचोड़ि गरजली दुर्गा करइत विविध सामरिक खेल॥
दुराधर्ष मायावी निश्चर धयलक पुनः महिषकेर रूप।
कयलक खल विक्षुब्ध जगत, पुनि चंडी चापल रहल न चूप॥
कहल—'अटक रे! सुर-कंटक खल! जा धरि छी हम मधु पिबइत'।
रण-मदिरारुण - नयन अम्बिका पुनि वारुणी पान करइत॥
रणोन्मत्त भय सिंहवाहिनी कूदलि महिषासुर क उपर।
कंठ दबोचि, शूल वेधल गल, पुनि ओहिसँ नर बनि निकसल॥
अर्ध शरीर पुरुष बहरायल धड़ आधा महिष क गर मध्य।
दाबि समस्त बलेँ क्रोधातुर दुर्गा हाथ बद्ध ओ बध्य॥
शूल चलाय हृदय वेधल पुनि, खड्ग उठाय काटि शिर लेल।
खसल हहाय काय-तरु असुरक जनु अन्हड़हिँ उखड़ि जड़ि गेल॥

हाहाकार मचल सेना मे, छिट-फुट दानव मारल गेल।
मुदित देव, गन्धर्व नृत्य-रत, मुनिजन वंदन कय मुद देल॥

[४]

अति पराक्रमी महिष मरल, असुर क दल प्रबल सकल निवँटल।
प्रणति-नम्र शिर सँ शक्रादि क सुरगण देवी-स्तवन कयल॥
जे जगदात्ममयी, समग्र देव क जे शक्तिमयी धन्या।
सुर-मुनि-मान्या, तनिक चरण नत; करथु सभक शुभ गिरिकन्या॥
जनिक अतुल बल महिमा गावि न सकथि अनन्त न विधि शंकर।
करथु जगत हित से दुर्गा भगवती, अशुभ भय हरथु सगर॥
जे सुकृती क सदन मे लक्ष्मी; जे पापी - घर दैन्य क सैन्य।
बुद्धि सुधी क; सज्जन क श्रद्धा; सती क लज्जा रूप प्रणम्य॥
रूप अचित्य; वीर्य रिपुनाशी सुरासुर क बिच पुनि रण मध्य।
अद्भुत चरित करत के चित्रित शब्द-फलक पर अति अनवद्य॥
त्रिगुण रूपिणी जगतक कारण हरि-हरहु क नहि ज्ञान विषय।
सर्वाश्रय, जग अंश जनिक ई, से कि होथि कहुँ वचन विषय॥
यज्ञ मध्य स्वाहा उच्चारित, हवि लय सुर केँ तृप्त करी।
स्वधा शब्द सँ श्राद्ध समय अहँ तृपित पितर मुह अमृत भरी॥

मुक्ति क कारण संयत-इन्द्रिय ऋषि-मुनि जनिक करथि अभ्यास।
छथि अचिन्त्य व्रत-धृता परा देवी विद्या जेहि बल संन्यास॥

शब्दमयी ऋक्, साम गीतमयि, यज्ञमयी यजु श्रुतित्रयी।
भवभावन हित लोक-साधिनी वार्ता जे कल्याणमयी॥

मेधा विदित शास्त्र - तत्त्वज्ञा प्रज्ञा भव – तारण – तरणी।
दुर्गा, हरि-उर-वासिनि लक्ष्मी, गौरी शिव गौरव वरणी॥

हासमयी पूर्णेन्दु-कान्तिमयि कनकगौरि गिरिजा क निहारि।
मुखरुचि, कोना दनुज करइत छल तदपि अहह! शरनिकरें मारि?

कुटिल-भृकुटि-कटु उदित नवेन्दु सवर्ण विवर्ण कुपित मुख देखि।
आश्चर्य पल भरि जीवल खल! कहु के जीवय काल परेखि?

भय प्रसन्न जगत क कल्याणी, नाशी सकुल कुपित जखनहि।
अछि प्रमाण कुल - सहित महिष संहारल जे अपने एखनहि॥

जनिका पर प्रसन्न मन देवी, मान तनिक, तनिके लाली।
सुकृती कृती कीर्तिशाली से होथि सबन्धु भाग्यशाली॥

अहिंक अनुग्रह सँ धर्म क पथ चलइत लेथि स्वर्ग-अपवर्ग।
तीनि लोक मे आदृत सदिखन फल पावथि से कृपें निसर्ग॥

दुर्गे! स्मरणेँ अहँ भय हारिणि, आर्द्र हृदय शुभ मति-दायिनि।
स्वस्थ चित्त मे ध्यान योग सँ जग दारिद्र्य दुःख दारिणि॥

असुर निपातें मुदित जगत हो, पुनि दनुजहु कुल कें कल्याण ।
अघी पातकी असुर बनओ सुर, रण मे मरणें शास्त्र प्रमाण ॥

किऐ न देखितहिं भस्म कयल खल, अस्त्र उठाब'क की छल काज ।
शस्त्र-पूत भय पहुँचओ सुरपुर, रिपुअहु पर करुणा निर्व्याज ॥

तरुआरि क धारा क चकमकी, शूल क तीखो नोक परेखि ।
ठहरि सकल जे आँखि असुर केर से अहाँक चन्द्रानन देखि ॥

अहँक शील दुर्वृत्ति क शामक, शुचि सौन्दर्य कल्पनातीत ।
देवविजेताहु क जेता अछि वीर्य, रिपुहु पर दया पुनीत ॥

अहँक पराक्रम अतुलनीय, रूपो मनहर, बल रिपु - भयकर ।
देखल त्रिभुवन मे अनुपम ई, हृदय सदय पुनि समर प्रखर ॥

अखिल लोक गतशोक, सुरक्षित असुर-निपातें जगत समस्त ।
शत्रुहु कें दय स्वर्ग, कयल निर्भय सुरवर्गहु कें जे त्रस्त ॥

शूल संग लय, खड्ग हाथ धय, घंटा ध्वनि कय, धनु टंकारि ।
रक्षा करब पूब-पच्छिम उत्तर-दच्छिन दिग्-विदिक् सम्हारि ॥

अछि स्वरूप जे सौम्य भुवन मे, जे पुनि घोर रूप प्रख्यात ।
ताहि सबहिसँ रक्षा करबे हमर तथा भरि जगत क मात !!

खड्ग शूल ओ गदा आदि किसलय सम कोमल कर मे राखि ।
सब दिस सँ, जत विषम विषय सँ, रक्षित करिअ जननि दृग ताकि ॥

एहि प्रकार सँ वन्दित, नन्दन-सुम अभिनन्दित परम प्रसन्न।
धूप गंध माल्यादि समर्पित अर्चित देवी कहल प्रपन्न॥
'वांछित वस्तु माङु' से सुनि सुर कहल न किछु अछि शेष विशेष।
महिषासुर केँ मारि, पूरि सभ, कयल दूर छल जत जे क्लेश॥
तदपि प्रसन्ना यदि वर दी तँ स्मृति मात्रहिँ हरु पुनि पुनि ताप।
कहि तथास्तु काली अन्तर्हित ! महिषमर्दिनिक जयतु प्रताप॥

[५]

भेद बुद्धि तजि, सजि चरम ऐक्य शक्ति संचार।
काम क्रोध दुर्मद युगल असुर करिअ संहार॥

पूर्व काल मे असुर सहोदर दुइ पुनि काम क्रोध अवतार।
शुंभ निशुंभ करय लागल बल-दर्प सभ लोक क संहार॥
इन्द्र क आसन छीनि सूर्य ओ चन्द्र क अधिकारो हरि लेल।
अनल अनिल जलदेव वरुणहु क काज अपन हाथहि धरि लेल॥
सकल पराजित देववृन्द अपराजिता क आवाहन कैल।
स्मरणेँ हरब त्रिपद, ई गुनि पुनि पहुँचल स्तवन करय हिम-शैल॥
'देवि शिवे भद्रे, जय जय हे प्रकृति ! चरण मे नियत प्रणाम।
रौद्रे नित्ये गौरी धात्री ! पाद-पद्म मे प्रणति ललाम॥

इन्दु-सहचरी ज्योत्स्ना जय हे ! अमा तामसी कल्याणी ।
प्रणत जन क सुख वृद्धि - कारिणी सिद्धि रूपिणी सर्वाणी ॥
लक्ष्मी दुर्गे दुर्गति - दारिणि सर्वकारिणी सारमयी ।
ख्याति रूप, पुनि पुनि अनूप सित कृष्णा धूम रुचि वर्णमयी ॥
परम सौम्यमय कुसुम-कोमला, रौद्रमयी पुनि वज्र-कठोर ।
जगत्प्रतिष्ठा हेतु क्रियामयि सोम-अग्नि द्रव-द्रव्य सडोर ॥
जे छथि देवी विष्णु क माया तनिक चरण मे नमो नमः ।
सभ प्राणी मे प्रसृत चेतना तनिक चरण मे नमो नमः ॥
प्रेरक बुद्धि, श्रान्तिहरि निद्रा, क्षुधा सकल सङ्कलनमयी ।
छायामयि जे देवी विदिता तनिक चरण मे नमो नमः ॥
शक्ति प्रवृत्तिमयी, जे तृष्णा जाग्रत, क्षमामयी करुणा ।
व्यक्ति-व्यक्ति मे व्याप्त जाति जे तनिक चरण मे नमो नमः ॥
लज्जामयी, शान्तिरूपा, श्रद्धा – विश्वासमयी देवी ।
कान्तिरूपिणि जे प्राणी मे तनिक चरण मे नमो नमः ॥
वृत्ति रूप सँ, स्मृति सँ स्मारित, दया-भावनें, तुष्टि—बलें ।
मातृरूप सँ जे छथि जागृत, तनिक चरण मे नमो नमः ॥
भ्रान्ति रूप पुनि अखिल लोक मे इन्द्रिय-गण क अधिष्ठात्री ।
प्राणि मात्र मे चिति रूपें जे, तनिक चरण मे नमो नमः ॥

सुरगण जनिक वन्दना करइछ, निज अभीष्ट- पूर्ति क आशेँ ।
शुभ क हेतु, ईश्वरी करथु कल्याण, मोचि बन्धन पाशेँ ॥
जनिक चरण मे झुकल सकल उद्धत दैत्येँ परितप्त अमर ।
स्मरण मात्र सँ आपद् - वारिणि, माथ चढाबी पद तनिकर ॥
स्मरण-नमन सँ देवगण क प्रकटित करुणामयि हिमकन्या ।
भागीरथी-सलिल शीकर सँ शीतल ही-तल अतिधन्या ॥
काय-कोश सँ निकसलि प्रतिमा अम्बिका क शुचि रुचिमय रूप ।
भेलि मातृका काली श्यामा नाम कौशिकी अपर विरूप ॥
देखल चण्ड मुण्ड दुइ निश्चर शुंभ निशुंभ क जे अनुचर ।
रूपवती युवती ई असुरेश्वर क योग्य बुझि कहल सचर ॥
हिमाचल क अंचल मे देखल चंचलनयन चन्द्रवदना ।
रमणीरत्न, अहींक योग्य थिक भोग्यवस्तु हे रसिकमना ॥
जे जे रत्न सयत्न सुसंचित त्रिभुवन-निधि सँ निज गृह आनि ।
ई गृहिणी गृहरत्न अनुपमे, व्यर्थ अर्थ ओ शक्ति बखानि ॥
जे धन जे मणि-रत्न विविध विध इन्द्र कुबेर वरुण यम देल ।
रमणीरत्न क अछि समक्ष सभ तुच्छ छुच्छ ई बुझि-सुझि लेल ॥
सुनि ई वचन शुम्भ लगल बगले मे बैसल जे सुग्रीव ।
वचन-चतुर छल, दूत बनाय पठौल सुन्दरी लग, उद्ग्रीव ॥

'प्रीति रीति सँ हमर निकट आनब, अहँ स्वयं चतुर मतिमान ।'
चलल अम्बिका लग लगले सुग्रीव वचनपटु जे असमान ॥
'देवि ! दैत्यपति, त्रिभुवनपति छथि संप्रति शुम्भ भुवन विख्यात।
आज्ञा जनिक अमोघ, तनिक सुनु वचन प्रीतिकर अति अवदात ॥
"त्रिभुवन मे जे धन-संपति सब हमर, रत्न-मणि हमरे थीक ।
रमणी - रत्न अहूं छी, रत्न क योग्य भाजनो हम हीं नीक ॥
जतय रुचय हमरा वा हमरे अनुज क संगिनि रंगिनि ! होउ ।
परिणीता भय सकल लोक-सुखभोग-शालिनी अंगिनि होउ ॥'
बाजलि बिहुँसि भगवती दुर्गा–'सत्य कथा कहलहुँ अहँ दूत !
किन्तु विवश छी, लेल प्रतिज्ञा पहिनहिं अबुझि असुझि अजगूत ॥
जे जीतथि संग्राम बीच, जे हमर गर्व कें खर्व करथि ।'
वैह हमर जोड़ी योद्धा परिणय-हित पाणिग्रहण करथि ॥
आवथु शुम्भ-निशुम्भ महासुर, जीतथु तखन बरथु हमरा ।'
सुनि सुग्रीव चमकि कय बाजल-'छह बताहि तोँ, कहु ककरा ?
अरे ! असुरपति बली जनिक आगाँ न देवगण सकथि ठहरि ।
तों एकसरि पुनि अबला सुन्दरि, भिड़बह रण मे कोना सम्हरि ॥'
"कथा सत्य अछि, शुम्भ निशुम्भ क बल-प्रताप जग मे विख्यात ।
किन्तु प्रतिज्ञा पूरणीय थिक, बहुत बुझाय कहब की तात ॥

सुनि ई उद्धत कथन क्षुब्ध-मन दूत स्वामि लग पहुँचल जाय।
कहल चंडिकेर कथा यथावत्, सुनितहिं शुम्भ गेल खिसिआय॥
आज्ञा देल धूम्रलोचन केँ, झोंट पकड़ि दुष्टा केँ आनि।
नर किन्नर सुर सब केँ मारह, उठथि ओकर पक्षे जे फानि॥
सेना सहस साजि ओ दौड़ल देवी शिखरवासिनी लग।
डपटि कहल—'चल, शुम्भ-निशुम्भ क निकट, विकट जे छथि अगजग॥
प्रेम क डोरी सँ चल, नहिं तँ बलजोरी सँ बान्हल जाय।'
'छह तों बली, बलिष्ठ क अनुचर; हम अबला एकसरि निरुपाय॥'
देवी-वचन सुनल जहिना झपटल तहिना धूम्राक्ष कुपित।
हुंकारी भरलन्हि दुर्गा, भय भस्मसात् राक्षस सभ मृत॥
हत-सेनापति सैनिक असुर क देवी-क्रोध - अनल पड़ि गेल।
बाण-बिद्ध भय कटय-मरय क्यौ शूल शक्ति सँ बेधित भेल॥
क्यौ तरुआरि क धार डुबल, क्यौ सिंह क पंजा मे पड़ि गेल।
खचल-खुचल असुर क दल देवी चरणाघातेँ थकुचल गेल॥

—*—

[७]

छन भरि मे दानव दल विदलित सुनल चौंकि आमर्ष बढ़ाय ।
दैत्यराज अति क्रुद्ध युद्ध मे चंड-मुंड कें देल पठाय ॥
मारि सिंह संहारि पकड़ि वा चंडी कें आनह धय झोंट ।
हो सन्दिग्ध द्वन्द्व तँ भिड़ह समग्र सैन्य लय करह न खोंट ॥
आज्ञा पाबि साजि सेना चतुरंग, चंड ओ मुंड प्रचंड ।
चलल चंडिका निकट विकट भट अस्त्र शस्त्र लय अति उद्दंड ॥
किन्तु हिमाचल-शिखर वासिनी हँसइत छली मधुर-हासिनि ।
उत्पाती दल पहुँचल, देखि रङलि दुर्गा दुर्गतिनाशिनि ॥
गौरी भेलि तामसें श्यामा, भृकुटी चढ़ल रक्त दृग तानि ।
खड्ग पाश लय काली सहसा प्रकट भेलि खल-दल भय दानि ॥
मुंडमालिनी, लहलह रसना, विकट दशन, चर्म क परिधान ।
विकट चपेटें, सक्कत मुक्कें, चरण क चोटें लेलन्हि प्रान ॥
दाँतें दाबि, शूल सँ ककरहु बेधि, छेदि बाणें ककरहु ।
खड्ग-चक्र सँ काटल ककरहु, गदा परिघ थकुचल ककरहु ॥

नष्ट सैन्य चंडासुर दौड़ल चंडिका क दिस शर चलबैत ।
चक्र चलाय मुंड पुनि झपटल विफल कयल चंडी बिहुँसैत ॥
कटकटाय पुनि विकट ओठ पुट पाँडरि काली दौड़लि धाय ।
काटल मुंड चंड केर खड्गेँ, मुंड पड़ायल अति भय खाय ॥
तकरहु हति पुनि रुंड-मुंड दुहु चंड-मुंड केर लय काली ।
अर्पल जाय चंडिका केँ बलि-पशु सम स्रवित रक्त लाली ॥
स्वयं चंडिका कहल—कालिके कालरूपिणी जयतु प्रसिद्ध ।
चंड मुंड जें रण संहारल नाम अहँक चामुंडा सिद्ध ॥

[८]

चंड-मुंड हत, निहत दैत्यबल देखि असुरपति कय फुफकार ।
पुनि सैनिक दल सकल सजौलक ताकि बजौलक कुल-परिवार ॥
दैत्य असुर जत, धौम्र कंबु कत, कालक, कालकेय, जत मौर्य ।
युद्ध हेतु कय साज, आज ने करह समर मे प्राण क चौर्य ॥
आज्ञा पाबि असुर दल उमड़ल घुमड़ल प्रलय घटा सन गर्जि ।
आयुध चकमक बिजुली झकझक, गर्जन बज्र बुंद शर सर्जि ॥
बाण वृष्टि कयलक देवी पर जनु गिरि पर झड़ तरु सँ फूल ।
काली गरजि कँपौल असुर-दल, सिंह दानव क दल मे हूल ॥

समय परखि सुरद्वेषी दैत्य क नाश क हित सुर सबहि क शक्ति ।
पहुँचलि देवी निकट जते छलि रहलि न छूटलि एको व्यक्ति ॥
जाहि सुर क जे भूषन वाहन वसन रूप आयुध रुचि रंग ।
तहिना देव-शक्ति सभ अयली पूरय चंडिका क रण संग ॥
ब्रह्माणी लय हाथ कमंडलु हंस चढ़लि पहुँचलि रण-भूमि ।
वृषभ - वाहिनी शूल - धारिणी रुद्राणी पुनि अयली जूमि ॥
शक्ति हाथ कौमारी अयली, ऐरावत चढ़ि इन्द्राणी ।
गरुडारूढ वैष्णवी प्रकटित भेली - शंख - चक्र पाणी ॥
शक्ति वराह क विकट दन्तुरा, दन्त-नखायुध नरसिंह क ।
वरुण कुबेर आदि दिक्पाल क, प्रस्तुत शक्ति समस्त सुरथ ॥
बीचहिँ ताहि प्रगट भय कहलन्हि देवशक्ति सङ श्रीईशान ।
मारि सुरारि सदल बल चंडी ! करिअ शीघ्र जगत क कल्यान ॥
किन्तु तुरन्त नीति - मत देवी दुर्गा शिव केँ दूत बनाय ।
असुर समीप समाद पठौलन्हि शुंभ निशुंभ क निकट जनाय ॥
'पावथु स्वर्ग इन्द्र, यज्ञ क शुचि अंश क भोग करथु सुर गन ।
जाथु असुर-दल पाताल क तल, जँ राखय चाहथि जीवन ॥
नहि तँ रण-बलि पड़बह, बनबह शिवा-भक्ष्य' ई सुनितहिँ क्रुद्ध ।
शिवदूती समाद; असुर क दल उमड़ल करय शक्ति सँ युद्ध ॥

मचल समर घनघोर शर-निकर उभय पक्ष सँ बरिसल जोर ।
अस्त्र-शस्त्र कत छुटल! एम्हर छल असुर, मातृका दोसर छोर ॥
ब्रह्माणी जल कमंडलु क लय ओज वीर्य दैत्य क हरलन्हि ।
माहेश्वरी त्रिशूल चलौलन्हि, चक्र वैष्णवी चमकौलन्हि ॥
बज्रें मारि कयल इन्द्राणी, शक्ति क चोट देल कौमारि ।
वाराही द्रंष्ट्रा सँ चीरल, नख तीरल नरसिंह क नारि ॥
अपन पक्ष कें देखि अरक्षित, मातृगण क पुनि संघ सुशक्त ।
रक्तवीर्य दुर्दान्त दैत्य केर, खौलि उठल नख-शिख धरि रक्त ॥
नाम यथा छल गुणो तथा, तें नाम यथार्थ रक्तबीज क ।
रक्त बिन्दु जत खसल भूमि पर उपजल तत्प्रमाण दनुजक ॥
से पुनि उठि उठि लड़य जनमितहिँ, मातृगण क सङ्ग रोष चढल ।
फुटल कपार अंग-भंगो पुनि, रक्त क धार बहल अविरल ॥
बिन्दु बिन्दु सँ असुर निकर कत जनमल अतिशय दुष्ट प्रबल ।
रक्त क कण कण बीज बनल जनु उपजल अन्न जकाँ खल-दल ॥
शत-शत बनि पुनि सहस-सहस गुनि, लक्ष-लक्ष असुर क समुदाय ।
रक्तबीज जे छल एकाकी अगणित तकरा तनुज सहाय ॥
किंकर्तव्य - विमूढ मातृगण, सुर नर मुनि बिच हाहाकार ।
रक्तबीज की करत, सोचि से काँपल जगत मचल चीत्कार ॥

देखि दुखी जग, कहल चंडिका काली केँ करु अब न अबेर।
बाबि मूह, लप लप जिह्वेँ चाटिय शोणित रक्तासुर केर॥
रक्तहीन होयत तखनहिं, हम करब असुर पर शर संधान।
रक्त बिन्दु नहिं खसत होयत तखनहिं एकरा सँ त्रान निदान॥
बहल चोट सँ बहुल रुधिर - धारा से भूपर खसय न देल।
लह लह करइत जीहेँ चाटल काली रक्त पिपासा लेल॥
चाटि चाटि पुनि असुर क काया जे चोटैल, जे रक्त सनल।
अस्थि मात्र नीरक्त रक्तबीज क शरीर कयलन्हि दुर्बल॥
खसल उलंग चितंग भूमि पर रक्तबीज जे छल दुर्दान्त।
नाचि उठलि मातृका, देवगण हर्षित, ऋषि-मुनि शान्त नितान्त॥

[६]

सुनि अद्भुत आख्यान रक्तबीजासुर-वध क समुत्सुक चित्त।
पुछल सुरथ मुनिकेँ, पुनि की कयलक निशुंभ ओ शुंभ विचित्त॥
ऋषि बजला, सुनि हनन रक्तबीज क असुराधिप क्रुद्ध नितांत।
सैन्य शेष संग लय अशेष कयलक चलि देवी केँ आक्रान्त॥
ठनल समर अति घोर प्रलय-काल क जनु उमड़ल घन क घटा।
असुर क दल बरिसाबय लागल अस्त्र-शस्त्र जत छल सभ टा॥

कतिधा काटल चाप, खड्ग, पुनि छिन्न, क्षुरप्र उठाय प्रचंड।
सिंह वाहन क उपर चलौलक, तकरहु कयलन्हि चंडी खंड ॥
शक्ति प्रहार कयल तकरो देखल निरस्त तँ चक्र चलौल।
लय त्रिशूल छूटल जुटि जुटि दल, दुर्गा रिपु कें कते खेलौल ॥
तम-तम करइत परशु हाथ लय बढ़ल निशुंभ अंबिका दीस।
बान तानि कय मारल देवी, खसल उलंग निशुंभ अनीश ॥
अनुज क दशा देखि शुंभासुर क्रोध-अंध दौड़ल ललकारि।
शंख फूकि टँकार कयल दुर्गा जग दुर्गति टारनिहारि ॥
बढ़लि गगन दिसि चढ़लि सिंह गरजलि, काँपल धरती नभ छोर।
कंपित रिपु सुनि अट्टहास अति विकट घनघटा गर्जन रोर ॥
'अटक दुष्ट भट !' कहइत चंडी कटइत शुंभ क आयुधजाल।
द्वन्द्व मचौलन्हि, शूल चलौलन्हि, मूर्छित कयलन्हि दनुज कराल ॥
तावत् पुनः चेतना पौलक दौड़ल चक्र उठाय निशुंभ।
काटल वाण चलाय चंडिका, गदा उठौलक पुनि अतिदंभ ॥
टुटल गदा, पुनि शूल चलौलक, खड्गहस्त चंडी उठलीह।
काटि शूल अपना त्रिशूल सँ असुर क हृदय छेदि नचलीह ॥
शूल विदारित असुर - वक्ष सँ पुनि नव रक्ष - पुरुष बहराय।
ललकारल देवी कें रण मे बड़े वेग सँ अस्त्र उठाय ॥

बहु विध कय संग्राम निशुंभ क प्राण लेल चंडिका प्रचंड।
हाहाकार मचल रिपु-दल मे मुदित मातृका-वृंद अखंड ॥

[१०]

प्राण सदृश अनुज क वध विह्वल देखि हताहत सैनिक ढेरि।
क्षुब्ध-क्रुद्ध बाजल शुंभासुर भगवती क दिस आँखि तरेरि ॥

आन आन देवी क बल क अवलेपेँ देखबह गौरव आज।
शक्ति व्यक्तिगत यदि रखइत छह एकसर लड़ह समर निर्व्याज ॥

कहल भगवती 'एकैवाऽहं' 'जगति काऽपरा' देखह दुष्ट।
हमर विभूति पुनः हमरहि मे समाविष्ट होयत अवशिष्ट ॥

ब्रह्माणी इन्द्राणी आदि क छली जते जे शक्तिमयी।
भेलि कलेवर-लीन बिन्दु-सागर जनि, बचली जगन्मयी ॥

पुनः रणाङ्गण मे चंडी सँ द्वंद्व मचौलक शुम्भासुर।
देखथि चकित चरित समर क सब, अमर मर्त्य जत असुर निकर ॥

धनु कर्षण सँ शर वर्षण सँ चक्र क घर्षण सँ संग्राम।
तुमुल मचल, हलचल सगरो छल गिरि कानन जनपद पुर ग्राम ॥

मेघ-घटा सँ बिजुलि-छटा वा लौह-शैल सँ कनकाचल।
कालिन्दी कज्जल सँ गंगा विशदसलिल वा धूम अनल ॥

लड़य-भिड़य जहिना, तहिना चंडी ओ शुंभ बीच टक्कर।
शुंभ छोड़य मायास्त्र, लगाबथि दिव्यास्त्र क देवी भक्कर॥
शुंभासुर मायास्त्र भयंकर छोड़ल चंडी दिस भमकाय।
दिव्यास्त्र क प्रयोग सँ देलन्हि देवी तकरा तुरित मेटाय॥
जते अस्त्र बल, जते शस्त्र भल, जतबा युद्ध क छल कौशल।
सभ क प्रहार कयल दैत्याधिप चलल न चंडी पर किछु बल॥
देखि विफल आक्रमण, पराक्रम अपन देखौल महाकाली।
विरथ कयल, काटल धनु पुनि ओ मुद्गर लय दौड़ल खाली॥
ओकरहु कटइत देखि दैत्य बस मुष्टि प्रहार करय लागल।
देवी कुपित चपेट मारि अति कयल विकल, खल भूमि खसल॥
पुनि उठि ठानल गगन-युद्ध ओ ततहु पछाड़ल देवी क्रुद्ध।
आब भूमितल पर भुजबल सँ दुष्ट दैत्य करइत छल युद्ध॥
थकित शत्रु कें, चकित स्वजन कें, व्यथित लोक कें जननि निहारि।
शुंभ क छाती पर तानल निज शूल शूलिनी सजग सम्हारि॥
कंपित करइत सगर धरातल, गिरि सागर वन नगर डगर।
असुर शुंभ निष्प्राण - कलेबर खसल, धसल भूतल भूधर॥
मरितहिँ जकरा, स्वस्थ जगत, नभ निर्मल, परम प्रसन्न दिगन्त।
पुर जनपद निर्बाध, नदी नद विमल, अभय वन-पथ मुनि-संत॥

धीर समीर बहल, दिनपति उद्दीपित, अग्नि क तेज प्रखर।
शान्ति शान्ति सँ ध्वनित प्रान्त छल हर्षक वर्षा अगर-डगर ॥

[११]

शुंभ-निशुंभ निहत दल-बल सह, जुटल देवगण इन्द्र समेत।
विकसित वदन-सरोज ओज भरि जननि क स्तुति करइत समवेत ॥

शरणागत क आर्ति सभ मेटल, भेटल सब सुख अहँक प्रसाद।
जगत क पालन करिअ जननि विश्वेश्वरि! मेटि विश्व अवसाद ॥

मही रूप सँ बनलि अहाँ छी जगत क एक मात्र आधार।
जल रूपें आप्यायित करइत अहँक वीर्य सामर्थ्य अपार ॥

विष्णुशक्ति अहँ, अहँक अमित अछि वीर्य, बीज विश्वक अहँ देवि।
मायामयी विश्वमोहिनि हे! मुक्ति हेतु सभ रहले सेवि ॥

विद्यामयी, कलामयि, महिला सकल अहीं क कला जननी।
पूरित जगत अहीं सँ वाङ्मयि! स्तुति की करत वेदवदनी !!

सर्वात्मिके स्वर्ग - अपवर्ग - प्रदायिनि, भुक्ति - मुक्ति - कारिणि।
स्वयं स्तुता छी तखन होयत कहु कोना स्तवन? उक्ति क धारिणि ॥

बुद्धि रूप सँ स्थित प्राणी मे नित जे तनिका नमस्कार।
देवि! स्वर्ग - अपवर्ग प्रदायिनि नारायणि पद नमस्कार ॥

काल-कला पल सँ युग धरि व्यापिनि परिणामप्रदे देवी ।
सृष्टि मात्र उपरत जत अविरत नारायणि पद नमस्कार ॥
सर्वमंगले सकल अर्थसाधिके त्रिनयने शिवात्मिके ।
शरणागत - रक्षिणी विलक्षणि नारायणि पद नमस्कार ॥
सृष्टि स्थिति लय जनिक पलक सँ शक्तिमयी हे सनातनी ।
गुण क परम आश्रय त्रिगुणात्मिक नारायणि पद नमस्कार ॥
शरणागत - आश्रय, दीनार्त क त्राणपरायिणि हे जननी !
सकल जगत केर बाधा बाधिनि नारायणि पद नमस्कार ॥
जोतल हंस जनिक रथ मे ब्रह्माणी रूप नयन पथ मे ।
कुश पवित्र जल भरल कमंडलु नारायणि पद नमस्कार ॥
चन्द्रभालिनी नागहारिणी शूलधारिणी वृषवाहिनि ।
माहेश्वरी रूपशालिनि जय नारायणि पद नमस्कार ॥
वर मयूर - वाहिनी अरुणाचूड क दल घेरलि शक्ति धरे ।
कलुष - रहित कौमारी देवी नारायणि पद नमस्कार ॥
फुकइत शंख, नचबइत चक्रो, गदा घुमबइत, शार्ङ्ग तनैत ।
परमायुधे वैष्णवी जयजय नारायणि पद नमस्कार ॥
उग्र चक्र लय हाथ, दन्त बल धरणी उद्धरिणी देवी ।
जय वाराही मूर्ति शुभंकरि नारायणि पद नमस्कार ॥

दुराधर्ष असुर क उर दारण हेतु नृसिंह रूप धारिणि ।
खरतर नखर सुरक्षित जगतल नारायणि पद नमस्कार ॥
वृत्रप्राण - हारिणी बज्रधारिणी सहस्र - नेत्र - शालिनि ।
जय ऐन्द्री ऐरावत - वाहिनि नारायणि पद नमस्कार ॥
शिवदूती हतदैत्य विकटमुख कटकट दन्तावलि जनिका ।
चंड - मुंड नाशिनि चामुंडे ! नारायणि पद नमस्कार ॥
लक्ष्मी लज्जा विद्या श्रद्धा पुष्टि स्वधा स्वाहा रूपा ।
महा - मोह - माया क रात्रि हे ! नारायणि पद नमस्कार ॥
मेधा सरस्वती शुभ्रा वरदा, जय धूम्रा तमोमयी ।
नियति रूपणी जयतु ईश्वरी नारायणि पद नमस्कार ॥
सर्वरूपमयि ! सर्व शक्तिमयि ! सर्वेशे ! सभ भय - संकट ।
विकट हरिअ हे दुर्गतिनासिनि ! नारायणि पद नमस्कार ॥
तीनि नयन युत वदन अहाँ केर सकल भीति सँ बचबओ आबि ।
भद्रकालिके ! अहँक उग्र ई शूल बचाबओ खल-दल दाबि ॥
ध्वनिएँ असुर तेज हारी घंटा - रव पापें बचबओ देवि !
रिपुरुधिराक्त खड्ग करगत शुभ करओ चंडिके ! पदरज सेवि ॥
तुष्ट रही तँ रोग नाश, पुनि रुष्ट रही तँ इष्ट विनाश ।
अहँक आश्रित क विपति न कहिओ, आश्रय स्वयं, पुरय जग आश ॥

धर्म क विद्वेषी दैत्य क जे हनन कयल धय रूप अनेक।
आन करत के ? हरत दीप की तिमिर ? उगथि यदि सूर्य कनेक॥
विद्या अहिँक तत्त्व शास्त्रो थिक अहिँक सत्त्व पुनि दोष विवेक।
द्योतित अहिँसँ आद्य वाक्य श्रुति व्यक्त अहीं अन्वय व्यतिरेक॥
ममता गर्त पतित जे जन मोहक अन्हार विच आन्हर भेल।
भ्रान्त नितान्त अशान्त जगत जे से सभ जननि ! अहिँक थिक खेल॥
आगि लगओ वा बाढ़ि बढ़ओ, गुम्हड़ओ घन-पवन,उड़ओ गिरिवर।
दावानल धधकओ, पाँतर बिच वा पाथर बिहाड़ि - अन्हर॥
फुफकारि विषम विषधर छड़पओ, अरि-दल लठैत चोरो डकैत।
राक्षस फनैत कतबो बिगड़ओ, जग रक्षित यदि अहँ छी तकैत॥
विश्वपालिका, विश्वधारिका, विश्ववन्दनीया विश्वेशि।
अहँक चरण मे प्रणत होथि जे विश्वाश्रय से बनथि विशेषि॥
देवि अनुग्रह करिअ, हरिअ दुख-दुर्गति दुर्गे ! जेना एखन।
जगत क पाप ताप सभ मेटिअ वरदे ! लोक क आर्त्ति जखन॥
देवी बजली—सुरगण ! जे मन भावय माङू वस्तु प्रशस्त।
जगत क हित मे,भगत क थित मे जे किछु उचित पुरब निज हस्त॥
देव कहल— हे अखिलेश्वरी, सकल बाधा क शमन हित आबि।
एहिना हरब जग क पीडा, क्रीडामयि पापी रिपु केँ दाबि॥

एवमस्तु कहि दुर्गा दुर्गतिनाशिनि पुनि आश्वासन देल।
जखन जखन हो असुर उपद्रव, द्रुतपद हरब धर्म थिति लेल॥
क्रमें युगान्तर मे जनमत पुनि शुंभ निशुंभ, करब संहार।
नन्दनन्दिनी विन्ध्यवासिनी जनमि यशोदा उदर उदार॥
वैप्रचित्त दानव दल भरि संसार उपद्रव करत जखन।
विकटानन हम काटि काटि, दन्तावलिएँ बालि लेब तखन॥
दानव दल क उर क रुधिरें होयत दन्तावलि रक्त हमर।
रक्तदन्तिका कहि कहि करता स्तुति हमरा पदप्रणत अमर॥
पुनि अकाल शत वत्सर - व्यापी बुंद पात धरि होयत नहि।
भय अयोनिजा मुनि जन हेरब बनब शताक्षी तखन हमहि॥
'अन्नमयी' उपजाय शाक-अन्नादि जिआयब शत-शत वर्ष।
शाकम्भरी नाम विख्यातहिँ मुनिजन पूजित रहब सहर्ष॥
दुर्ग दैत्य केँ मारि नाम दुर्गा, भीमा पुनि असुर संहारि।
अरुण दनुज केँ मरदि बनब भ्रामरी भ्रमरदल संग हकारि॥
एहिना जतय जखन कखनहु हो उत्पाती दनुज क उत्थान।
तखन तखन हम अवतरि नाशब पाप, करब धर्म क कल्याण॥

[१२]

देवी बजली—'नित्य समाहित-चित्त व्यक्ति जे भक्ति समेत।
स्तवन करत एहि स्तुत्य चरित सँ तनिक हरब बाधा समवेत॥

मधु-कैटभ क नाश, महिषासुर घात, निशुंभ-शुंभ वध-वृत्त।
पढ़त सुनत जे से न पड़त दुख, नहि कखनहु दुर्वृत्ति प्रवृत्त॥

श्रवण करिअ नित, मनन करिअ चित अष्टमि,नवमि,चतुर्दशि तात!
दुःख-दैन्य नहि, भय-वियोग नहि, नहि जल अनल-अनिल उत्पात॥

त्रिविध ताप नहि रहय जतय हो चंडी चरित क नियमित जाप।
निकट बसी हम, हरी विपति अति, संपति संतति हमर प्रताप॥

बहुत कहिअ की? भीत बध्य बंधन-गत व्याधित संकट-ग्रस्त।
चरित हमर चित राखि तरथि अति दुर्ग दुर्गति क सिन्धु समस्त॥'

ई कहि चंडी चंड-विक्रमा अन्तर्हित भेली तत्काल।
यज्ञभाग पौलन्हि सभ सुर पुनि, बचल असुर पहुँचल पाताल॥

एहिना नित्या रहितहुँ लय अवतार भगवती जखन-तखन।
सुरथ! करथि संसार चालना, जनि बल अग-जग जन्म निधन।

सृष्टि स्थिति अवसान जनिक गुण, ज्ञान मोह जनिके गुण लेश।
याचित तोषित देथि सुमति गति संपति सुत वित, हरथि कलेश॥

[१३]

सुरथ समाधि दूहू कें सभटा कथा सुमेधा मुनि-सत्तम।
कहल महामाया क महा तम-हर माहात्म्य परम उत्तम॥

देवी विद्या विष्णु क माया, जे जन - जन काँ मोहथि नित्य ।
कत मोहल, कत मोहित करती, जे नहि बनले हुनकर भृत्य ॥
तनिके चरण शरण गहु, जे छथि परमेश्वरी महामाया ।
योग - भोग अपवर्ग - स्वर्ग सभ देथि पूजिता शिवजाया ॥

मुनि क वचन सुनि,हृदय अधिक गुनि,कय प्रणाम नृप वैश्य युगल ।
चलल समाराधन हित जननि क, ममता मोह विकल जे छल ॥
भगवती क दर्शन क व्यग्रतेँ नदी - पुलिन बसि देवी सूक्त ।
जपल, तपल कत राखि मृण्मयी प्रतिमा जननि क जे श्रुति-उक्त ॥
धूप-दीप फल-फूल समर्पित कय पूजथि नित नियमित भेल ।
मिताहार कय, यताहार भय, निराहार पुनि तन्मय भेल ॥
अपन गात्रहि क रक्त दान सँ बलिदानी जननी क सुभक्त ।
तीन वर्ष धरि कयल तपस्या, भेल भक्तवश्या माँ व्यक्त ॥
'वरं ब्रूहि—वर माङु, अहाँ पर छी प्रसन्न हे सुरथ ! समाधि !'
दुहु जन अंजलि जोड़ि गोड़ लागल कत-कत, सभ मेटल आधि ॥
सुरथ अचल राज्यहि क याचना, लेल समाधि ज्ञानहि क भीख ।
एक क भुक्ति क प्यास तीख छल, दोसर बन्धन-मुक्ति क सीख ॥
'एवमस्तु' कहि देवी दुहु केँ, कहल—सुरथ ! कय राज्यक भोग ।
विवस्वान सँ पावि जन्म पुनि मनु सावर्ण्य बनब शुभ योग ॥

* इति चण्डीचरणार्पितमस्तु *

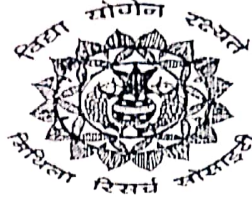
देवी विद्या विष्णु क माया, जे जन - जन काँ मोहथि नित्य ।
कत मोहल, कत मोहित करती, जे नहि बनले हुनकर भृत्य ॥
तनिके चरण शरण गहु, जे छथि परमेश्वरी महामाया ।
योग - भोग अपवर्ग - स्वर्ग सभ देथि पूजिता शिवजाया ॥

मुनि क वचन सुनि,हृदय अधिक गुनि,कय प्रणाम नृप वैश्य युगल ।
चलल समाराधन हित जननि क, ममता मोह विकल जे छल ॥
भगवती क दर्शन क व्यग्रतेँ नदी - पुलिन बसि देवी सूक्त ।
जपल, तपल कत राखि मृण्मयी प्रतिमा जननि क जे श्रुति-उक्त ॥
धूप-दीप फल-फूल समर्पित कय पूजथि नित नियमित भेल ।
मिताहार कय, यताहार भय, निराहार पुनि तन्मय भेल ॥

अपन गात्रहि क रक्त दान सँ बलिदानी जननी क सुभक्त ।
तीन वर्ष धरि कयल तपस्या, भेल भक्तवश्या माँ व्यक्त ॥
'वरं ब्रूहि—वर माङु, अहाँ पर छी प्रसन्न हे सुरथ ! समाधि !'
दुहु जन अंजलि जोड़ि गोड़ लागल कत-कत, सभ मेटल आधि ॥

सुरथ अचल राज्यहि क याचना, लेल समाधि ज्ञानहि क सीख ।
एक क भुक्ति क प्यास तीख छल, दोसर बन्धन-मुक्ति क सीख ॥
'एवमस्तु' कहि देवी दुहु केँ, कहल—सुरथ ! कय राज्यक भोग ।
विवस्वान सँ पावि जन्म पुनि मनु सावर्ण्य बनब शुभ योग ॥

❊ इति चण्डीचरणार्पितमस्तु ❊



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा
(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥


॥ बिज्ञापन ॥


मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक–

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय. एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो. तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय. गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय श्रो मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि. समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान नानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट—छथि । श्रो दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे श्रो सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासद्गणमें नृ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।